Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अहोई अष्टमी पूजा विधि ॥

॥ जय अहोई माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजन की तैयारी और सामग्री ॥

अहोई अष्टमी पर माता अहोई का चित्र बनाकर या छपा हुआ पूजा-चित्र रखकर आराधना की जाती है। घर की परंपरा के अनुसार पूजा का स्थान और सामग्री पहले तैयार कर लें। नीचे सामान्य घरेलू पूजन का क्रम दिया गया है।

पूजा-चित्र और चौकी

अहोई माता, स्याहु और उसके बच्चों वाला पूजा-चित्र या कैलेंडर रखें। परंपरागत चित्र में अष्टमी से जुड़े आठ कोष्ठक भी मिलते हैं। दीवार पर चित्र बनाना हो तो गेरू आदि का उपयोग करें। स्वच्छ चौकी, साफ वस्त्र और बैठने का आसन तैयार रखें।

सामान्य पूजन सामग्री

रोली या कुमकुम, अक्षत, मौली, पुष्प, दीपक, बाती, घी या तेल, धूप, पूजा की थाली और स्वच्छ जल रखें। कलश या लोटा तथा अर्घ्य देने के लिए करवा रखें। घर की रीति में उपयोग होने वाले गेहूँ, ढक्कन और अन्य वस्तुएँ भी तैयार कर लें।

भोग और पारंपरिक वस्तुएँ

फल, मिठाई तथा परंपरानुसार हलवा, पूरी या पुए रखें। कुछ परिवारों में आठ पूरी और आठ पुए का भोग लगाया जाता है। चाँदी की स्याऊ, उसके मनके और सरई की सींक का उपयोग आपकी परंपरा में हो तो उन्हें भी पूजा में रखें।

भोग की संख्या, चाँदी की माला और विशेष सामग्री हर परिवार में एक जैसी नहीं होती। अपने घर की रीति के अनुसार तैयारी करें।

॥ संकल्प और अहोई माता पूजन ॥

१. प्रातः स्नान और संकल्प

प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। अहोई माता का स्मरण करें और सभी संतानों के मंगल की कामना से अपनी क्षमता के अनुसार व्रत का संकल्प लें। पारण तारों को अर्घ्य देकर करना है या चंद्र दर्शन के बाद, यह पारिवारिक परंपरा पहले जान लें।

२. पूजा-स्थल की व्यवस्था

संध्या से पहले साफ स्थान पर अहोई माता का चित्र लगाएँ या बनाएँ। चौकी पर वस्त्र बिछाकर जल का पात्र रखें। जहाँ गेहूँ के ऊपर कलश और उसके साथ करवा रखने की रीति हो, वहाँ वही व्यवस्था करें। दीपक को स्थिर और सुरक्षित स्थान पर रखें।

३. माता का पूजन

गणेशजी का स्मरण करके अहोई माता को प्रणाम करें। रोली, अक्षत और पुष्प अर्पित करें। धूप-दीप दिखाएँ और तैयार नैवेद्य चढ़ाएँ। स्याहु और उसके बच्चों के चित्र के सामने भी श्रद्धा व्यक्त करें। चाँदी की स्याऊ हो तो उसे परिवार की रीति से पूजें।

४. अपनी भाषा में प्रार्थना

हे अहोई माता! हमारी संतानों और संसार के सभी बच्चों का मंगल करें। हमें धैर्य, करुणा और अच्छे संस्कार दें, जिससे हम प्रेमपूर्वक उनकी देखभाल कर सकें। घर-परिवार में सद्भाव और संतोष बना रहे।

॥ जय अहोई माता ॥

॥ कथा, आरती और पूजा का समापन ॥

५. अहोई की कथा सुनें

पूजा के समय अहोई अष्टमी की कथा पढ़ें या सुनें। हाथ में गेहूँ अथवा अक्षत रखने की परंपरा हो तो उसका पालन करें। परिवार के सदस्य साथ बैठ सकते हैं। कथा के अलग-अलग रूप मिलते हैं; अपने घर में प्रचलित रूप को श्रद्धा से सुनें।

६. आरती और आशीर्वाद

कथा के बाद अहोई माता की आरती करें और प्रणाम करें। घर के बड़ों से आशीर्वाद लें। भेंट या बायना देने की परंपरा हो तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार दें। पूजी हुई स्याऊ की माला धारण करने की रीति भी कुछ परिवारों में प्रचलित है।

७. तारों या चंद्रमा को अर्घ्य

सामान्य परंपरा में संध्या को तारे दिखाई देने पर जल से अर्घ्य दिया जाता है। जिन परिवारों में चंद्र दर्शन का विधान हो, वे स्थानीय चंद्रोदय के अनुसार उस रीति का पालन करते हैं। दोनों परंपराओं के समय को एक जैसा न मानें।

८. प्रसाद और पारण

अर्घ्य और प्रार्थना के बाद जल व प्रसाद ग्रहण करके व्रत खोलें। फिर परिवार सहित भोजन करें। प्रसाद सम्मानपूर्वक बाँटें। पूजा की उपयोगी वस्तुएँ साफ करके रखें और दीपक पूरी तरह बुझने के बाद ही स्थान छोड़ें।

इस पुस्तिका में स्थायी घड़ी का समय नहीं दिया गया है। पूजा का मुहूर्त और तारा-दर्शन अथवा चंद्रोदय का समय अपने शहर व वर्ष के पंचांग से देखें।

॥ अहोई माता सबका मंगल करें ॥